शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक २ : नई दिल्ली : १४-२० अप्रेल २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८ गांधीधाम (गुजरात) पधार गए हैं। यहां पूज्यप्रवर चार दिन प्रवास करेंगे। आगामी १२ मई को आचार्यप्रवर वाव पधारेंगे। वहां १३ मई को अक्षय तृतीया का पावन समायोजन होगा। इस अवसर पर देश के सुदूर क्षेत्रों से समागत तपस्वी भाई-बहन वर्षीतप का पारणा करेंगे। १५ मई को पूज्यप्रवर वाव से राजस्थान की ओर विहार करते हुए २२ मई को राजस्थान की सीमा में प्रवेश करेंगे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर कच्छ में

भुज में भव्य मंगल प्रवेश

३ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः वर्धमान नगर (भुजोड़ी) से भुज की ओर विहार किया। आचार्यवर ने विहार के दौरान वर्धमान नगर स्थित तेरापंथी घरों तथा अनेक अन्य जैन घरों का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर भुज में स्थित वागड़ बे चौबीसी समाज के भवन में पधारे और कुछ क्षण वहां विराजमान हुए। यहां स्वामीनारायण सम्प्रदाय के श्री हरिप्रिय स्वामी तथा योगीकृष्ण स्वामी ने आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। लगभग छियालीस वर्षों के बाद तेरापंथ के आचार्य का भुज में पावन पदार्पण श्रद्धालुओं के उल्लास को चरम पर ले जाने वाला था। तेरापंथ समाज सहित सात जैन समुदाय (छह कोटि, आठकोटि मोटी पक्ष, नानीपक्ष, तपागच्छ, खरतरगच्छ, अचलगच्छ) भी आचार्यवर के पुनीत समागमन से आह्लादित थे। हजारों-हजारों लोग आचार्यवर का स्वागत करने हेतु समुद्यत थे। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था।

आर.टी.ओ. से प्रारंभ हुआ भव्य स्वागत जुलूस हॉस्पिटल रोड, लालटेकरी, मेहरअली चौक, वाणीचावाड़, छठी बारी, बसस्टैण्ड होते हुए प्रवास स्थल के सामने इन्द्रा पार्क में निर्मित वीतराग समवसरण में पहुंचकर विशाल सभा में रूप में परिणत हो गया। जुलूस मार्ग के दोनों ओर तथा ऊंची-ऊंची इमारतों पर खड़ा विशाल जनसमूह आचार्यवर के दर्शन हेतु समुत्सुक था। भव्य स्वागत जुलूस में हजारों लोगों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति और उनके द्वारा उच्चरित बुलन्द जयघोष उनकी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दे रहे थे। जुलूस मार्ग के मध्य तेरापंथ और कच्छ से संबद्ध तेरापंथ महिला मंडल और ज्ञानशाला द्वारा जो झांकियां प्रदर्शित की गईं, वे इस प्रकार थीं--

कच्छ की संस्कृति (कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा), कच्छ में तेरापंथ का बीजवपन, श्रीमज्जयाचार्य रचित 'भ्रम विध्वंशन' ग्रंथ का कच्छी श्रावक लालजीभाई द्वारा प्रकाशन, नानीपक्ष के मुनि बींजपालजी और तेरापंथ के डालमुनि (आचार्य डालचन्दजी) के शास्त्रार्थ के दौरान नानीपक्ष के प्रतिष्ठित श्रावक वीरचन्दभाई द्वारा तेरापंथ की गुरुधारणा का स्वीकरण, मुनि तेजमालजी की संघनिष्ठा, आचार्यश्री तुलसी का साम्प्रदायिक सद्भाव, वीरजी देवजीभाई दोशी द्वारा कच्छ के श्रावक समाज में प्रथम अनशन का ग्रहण आदि।

स्वागत जुलूस के मध्य स्थानीय नगरपालिका द्वारा अभिहित 'आचार्य तुलसी मार्ग' का लोकार्पण हुआ। पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर मांडवी विधायक श्री ताराचन्दभाई छेड़ा, भुज नगरपालिकाध्यक्ष श्री नरेन्द्रभाई (शंकरभाई ठक्कर) भाजपा जिलाप्रमुख श्री पंकजभाई मेहता आदि ने मार्ग को लोकार्पित किया।

स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय की साध्वी पीयूषाबाई आदि साध्वियों ने जुलूस के बीच आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर मार्ग में स्थानीय तेरापंथ भवन में भी पधारे और कुछ क्षण वहां आसीन हुए। संलेखनारत श्री महादेवभाई (बाबूभाई) मगनलाल दोशी के आवास पर पधार कर आचार्यवर ने उन्हें सात का प्रत्याख्यान करवाया। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु ख्याति का घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। इस प्रकार चिलचिलाती धूप में लगभग ११ किमी. का विहार कर आचार्यवर डोसीभाई लालचन्द जैन धर्मशाला पधारे। पांचदिवसीय प्रवास यहीं हुआ।

स्वागत में शिष्या उपहृत

इन्द्राबाई पार्क में निर्मित वीतराग समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम स्वागत समारोह एवं दीक्षा समारोह--इन दो चरणों में विभक्त था। भुजवासियों ने मानों आचार्यवर का स्वागत भुज की एक शिष्या भेंट कर किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुमुक्षु नम्रता ने दीक्षार्थिनी ख्याति का परिचय प्रस्तुत किया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के सहमंत्री श्री डूंगरमल बागरेचा ने दीक्षार्थिनी के परिजनों की ओर से प्रस्तुत आज्ञापत्र का वाचन किया। दीक्षार्थिनी के पिता श्री विनोद दोशी आदि परिजनों ने आज्ञापत्र आचार्यवर के करकमलों में समर्पित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने दीक्षार्थिनी के ज्ञातिजनों की मौखिक स्वीकृति प्राप्त करते हुए दीक्षार्थिनी की आन्तरिक भावना का परीक्षण किया। तदुपरान्त पूज्यवर ने भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु आदि तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परंपरा तथा अपने धर्माचार्य परमपूज्य गुरुदेव तुलसी एवं परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष रूप से श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए आर्षवाणी के समुच्चारण के साथ भुज की मुमुक्षु ख्याति को समणी दीक्षा प्रदान की। नवदीक्षित समणी ने आचार्यवर को विधिवत वंदना की। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी ने आर्ष आशीर्वाद के साथ नवदीक्षित समणी को प्रमार्जनी प्रदान की। आचार्यवर ने नामकरण संस्कार संपन्न करते हुए नवदीक्षित समणी को नया नाम दिया--समणी ख्यातिप्रज्ञा। पूज्यवर ने दीक्षान्त संबोध प्रदान करते हुए नवदीक्षित समणी को अपनी प्रत्येक क्रिया में संयम रखने तथा गुरुआज्ञा व समणश्रेणी की आचारसंहिता के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की।

स्वागत में श्रद्धाभिव्यक्ति

स्वागत समारोह के अंतर्गत स्थानीय तेरापंथ महिला और कन्यामंडल ने गीत का संगान किया। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, कच्छ के संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी, सहसंयोजक श्री कीर्तिभाई, महामंत्री श्री शान्तिलाल बागरेचा, स्थानीय तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री भरतभाई, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती जयश्रीबेन, तेयुप के अध्यक्ष श्री नवीनभाई शाह, तेरापंथ डीकरी ग्रुप की ओर से श्रीमती प्रतिमाबेन, श्री वाडीभाई मेहता एवं श्री कमलेश खंडोर ने अपने आराध्य के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। कच्छ जिला भाजपा प्रमुख श्री पंकजभाई मेहता, भुज सात जैन संघ के अध्यक्ष श्री भद्रेशभाई शाह, अखिल भारतीय बागड़ बे चौबीसी सभा के अध्यक्ष श्री भोगीभाई मेहता ने आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

स्थानकवासी लीमड़ी अजरामर सम्प्रदाय की साध्वी पद्मिनीबाई ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। भुज से संबद्ध मुनि अनंतकुमारजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी हिमप्रज्ञाजी, समणी करुणाप्रज्ञाजी, समणी जिज्ञासाप्रज्ञाजी, समणी रुचिप्रज्ञाजी तथा समणी क्षान्तिप्रज्ञाजी ने पूज्यप्रवर की आस्थासिक्त अभिवंदना की।

त्याग है सुख का कारण

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संयमरत साधु का जीवन देवलोक के समान सुखमय होता है। एक त्यागी और समतावान व्यक्ति को जो सुख मिलता है, वह किसी रागी को कैसे मिल सकता है? जो साधु साधना में रम जाता है और जिसकी चेतना में साधना रम जाती है, उसका सुख देवलोक के समान बताया गया है। त्याग सुख का और राग दुःख का कारण बनता है। अध्यात्म चेतना जब अमंद होती है तो साधु को आनंद प्राप्त होता है। गृहस्थ के जीवन में भोग भी चलता है, किन्तु उसे सोचना चाहिए कि मेरा जीवन भोगप्रधान न बने। भोग पर योग का, राग पर त्याग का, मनोरंजन पर आत्मरंजन का अंकुश रहना चाहिए।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति को केवल वर्तमान जीवन को ही नहीं देखना चाहिए, भविष्य के बारे में भी सोचना चाहिए। यह जीवन तो सीमित है, जबकि आगे अनंतकाल है। इसलिए अगली गति को भी अच्छा बनाने के लिए सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। साधु बनने का अर्थ है, भावी की ओर ध्यान देना कि कैसे मोक्ष की ओर आगे बढ़ सकूं। सबके लिए साधु बनना संभव नहीं होता। गार्हस्थ्य में रहते हुए भी व्यक्ति को संयम की साधना का अभ्यास करना चाहिए। श्रावक के बारहव्रतों और अणुव्रतों को स्वीकार किया जाए तो गृहस्थ जीवन में भी त्याग की दिशा में गतिमान हुआ जा सकता है। गृहस्थ जीवन में यदि यथासंभव नैतिकता के अनुपालन का प्रयास किया जाता है तो मानना चाहिए कि कुछ अंशों में धार्मिकता जीवन में आई है।'

आशीर्वाणी हुई कृतकृत्य

भुज समागमन के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा--'आज हम भुज में आए हैं। मुझे स्मरण हो रहा है--एक बार परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी जैन विश्वभारती की सुधर्मा सभा में विराजमान थे। कच्छवासियों की भावनात्मक पुकार को सुनकर गुरुदेव ने जो कहा था, संभवतः उसका भाव इस प्रकार था कि 'मैं स्वयं कच्छ आ सकूं तो ठीक, अन्यथा महाश्रमण कच्छ की यात्रा करेंगे।' मुझे संतोष है कि मैंने गुरुदेव महाप्रज्ञजी के वचन को पूरा करने में सफलता प्राप्त कर ली है और आज कच्छ के मुख्य क्षेत्र भुज में आ गया हूं। गुरुदेव की आशीर्वाणी आज मानों कृतकृत्य हो गई। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी लगभग छियालीस वर्ष पूर्व कच्छ पधारे थे। एक लंबे अन्तराल के बाद हम आए हैं। हमारे साथ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हैं, जो गुरुदेव तुलसी के साथ उस समय एक विद्यार्थी साध्वी के रूप में आईं थीं। इनमें प्रतिभा है, चिंतनशीलता, तार्किकता, अध्ययनशीलता और अध्यापनशीलता है। लगभग ४१ वर्षों से साध्वीप्रमुखा का दायित्व संभाल रही हैं। हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने गुरुदेव तुलसी के पास साध्वियों की देखरेख का कार्य किया, साहित्य संपादन आदि कार्य भी किया। गुरुदेव महाप्रज्ञजी की सन्निधि में भी कार्य किया और अब हमारे पास कर रही हैं। इनमें विनय और समर्पण का भाव है।

श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री को भी हम अपने साथ लाए हैं, जो हमारे धर्मसंघ के वरिष्ठतम मुनि हैं। बहुत छोटी अवस्था में मुनि घासीरामजी स्वामी के साथ कच्छ में पधारे थे। उसके बाद अब हमारे साथ आना हुआ है। मंत्री मुनिश्री का अपना ज्ञान है, अध्ययन है, प्रभावी वक्तृत्व कला है। यों लगता है, जैसे कोई भीतरी ऊर्जा है, ज्ञान का प्रतिपादन करने की क्षमता है, जिज्ञासाओं को समाहित करने की भी कला है। आप ज्योतिष के भी वेत्ता हैं। इस विद्या में आपकी अच्छी गति है। हमारे धर्मसंघ में संवत्सरी की तिथि निर्धारण के लिए आप प्रतिवर्ष प्रस्ताव रखते हैं। इसके बाद इस विषय में आचार्य अपना निर्णय देते हैं।

मुख्यनियोजिका भी हमारे साथ भुज आई हैं। इन्होंने आचार्य महाप्रज्ञजी के पास बहुत काम किया। इससे पहले समणीनियोजिका के रूप में वर्षों तक रहीं। गुरुदेव तुलसी के समय इनकी साध्वी दीक्षा हो

गई थी। इन्होंने अच्छा विकास किया है। इनकी प्रतिभा अच्छी निखरी है। साध्वियों में साध्वीप्रमुखा के बाद इनका स्थान है। ये साध्वियों की व्यवस्था से भी संपृक्त हैं और समणश्रेणी की भी देखभाल करती हैं। बहुत विनयभाव से कार्य करती हैं।' आचार्यवर ने प्रसंगवश बालमुनियों का भी परिचय कराते हुए उनके उत्साह तथा अन्य साधु-साध्वियों के परिश्रम का उल्लेख किया।

भुज के साधु-साध्वियों और समणियों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हमारे साथ भुज के संत अनंतकुमारजी हैं। इनके बारे में जानकारी मिली कि इन्होंने सगाई छोड़कर दीक्षा ली है। इनकी जिनके साथ सगाई हुई, बाद में उसने (समणी जिज्ञासाप्रज्ञा) भी दीक्षा ले ली। यह किसी रूप में नेम-राजुल का-सा उदाहरण है। दोनों ने सगाई के बाद साधना का पथ स्वीकार कर लिया, यह बहुत बड़ी बात है। मुनि अनंतजी को मंत्री मुनिश्री का सामीप्य प्राप्त है। ये हमारे धर्मसंघ के अच्छे संत हैं। खूब अच्छी सेवा और अच्छा कार्य करते रहें। साध्वी हेमलताजी भी किसी रूप में यहां से संबद्ध हैं। गत वर्ष अग्रणी के रूप में इनका चतुर्मास हमने पचपदरा करा दिया। इनकी संसारपक्षीया भतीजी साध्वी अर्चनाश्री छोटी साध्वी है। समणी निर्मलप्रज्ञाजी का थोड़ा संबंध भुज के साथ है। समणी हिमप्रज्ञा, समणी रुचिप्रज्ञा, समणी करुणाप्रज्ञा, समणी जिज्ञासाप्रज्ञा, समणी क्षान्तिप्रज्ञा और आज दीक्षित समणी ख्यातिप्रज्ञा भुज से संबद्ध हैं। समणी रुचिप्रज्ञा मुनि अनंतजी की संसारपक्षीया बहन है।

मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी भी कच्छ से संबद्ध हैं। उन्हें साथ लाने का निर्णय हमने कर भी लिया था, किन्तु स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण वे हमारे साथ नहीं आ सके। वे बहुश्रुत परिषद के सात सदस्यों में एक हैं। अच्छे विद्वान और प्रतिभासंपन्न हैं। शासनभक्ति रखने वाले धर्मसंघ के एक महत्त्वपूर्ण संत हैं। यहां के मुनि सिद्धार्थकुमारजी काफी शान्त और मृदु स्वभाव के संत लगे। पहले उनका नाम हंसमुख था, वैसे ही हंसमुख स्वभाव वाले संत प्रतीत हुए। उनकी संसारपक्षीया भतीजी आज समणश्रेणी में दीक्षित हुई है। वयोवृद्धा साध्वी मूलांजी, साध्वी मंगलयशाजी, साध्वी प्रभावतीजी, साध्वी विवेकश्रीजी, मुनि अनंतजी की संसारपक्षीया भगिनीद्वय साध्वी मुक्तिश्री और साध्वी मल्लिकाश्री, साध्वी मलययशा, साध्वी गौरवयशा और साध्वी केवलयशा--ये साध्वियां भी संसारपक्ष में भुज की हैं। अभी हमारे साथ नहीं आ सकीं। यहां से संबद्ध सभी साधु-साध्वियों और समणियों के प्रति हम उनके क्षेत्र में मंगलकामना करते हैं कि सभी खूब अच्छी साधना, अच्छा विकास और अच्छा कार्य करते रहें।'

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय की साध्वी पद्मिनीबाई आदि साध्वियों के प्रति भी अपने प्रवचन के दौरान आध्यात्मिक मंगलकामना अभिव्यक्त की।

अहिंसाप्रधान हो जीवनशैली

४ अप्रेल। भुज प्रवास का दूसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः स्थानीय श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श प्रारंभ किया। प्रारंभ की कुछ इमारतों में आचार्यवर ने तीन-तीन मंजिल ऊपर स्थित श्रावकों के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। किन्तु ऊपरी मंजिल में स्थित घरों की बहुलता के कारण बाद की इमारतों में नीचे से ही मंगलपाठ सुनाने का क्रम रखा गया। ग्राउण्ड फ्लोर पर स्थित श्रावकों के घरों में चरणस्पर्श का क्रम यथावत रखा गया। पूज्यवर के पादाम्बुज से अपने घरों को पावन बना देखकर श्रद्धालु अत्यन्त आह्लादित थे। अनेक अन्य जैन घरों में भी आचार्यवर का पावन पदार्पण हुआ।

चरणस्पर्श के दौरान आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे और कुछ क्षण वहां विराजमान होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का संगान किया।

तेरापंथ समवसरण में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था--'अहिंसा परमो धर्मः।' आचार्यवर से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी एवं मंत्री मुनिश्री के विषयाधारित प्रेरक प्रवचन हुए। भुज से संबद्ध

साध्वियों ने गीत का संगान किया। साध्वी हेमलताजी एवं साध्वी संभवश्रीजी ने विचाराभिव्यक्ति दी। भुज की साध्वी मल्लिकाश्रीजी द्वारा प्रेषित भावनाओं का श्री चंदूभाई सिंघवी ने वाचन किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संस्कृत वाङ्मय में अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। अहिंसा के अन्तर्गत सत्य आदि व्रत भी समाविष्ट कर लिए जाएं तो उसे परम धर्म कहना पूर्णतः यथार्थ प्रतीत होता है। हिंसा का अभाव अहिंसा है। शरीरधारी के लिए अहिंसा की जीवनभर पूर्णतया अनुपालना बहुत कठिन होती है। साधु अहिंसा महाव्रत का आराधक होता है, किन्तु उसके लिए द्रव्यहिंसा से पूर्णतया बचना कठिन होता है। गृहस्थ के लिए भी चिंतन की बात है कि जीवन में अहिंसा का विकास कैसे हो? आक्रोश और लोभ पर नियंत्रण हो तो हिंसा से काफी बचा जा सकता है। व्यक्ति का लक्ष्य बने कि मेरी जीवनशैली अहिंसाप्रधान रहे, फिर वैसा प्रयास भी रहे तो गृहस्थ भी अहिंसा की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

पूज्यवर के प्रवचन के उपरान्त साध्वी नगीनाजी की नवीन कृति 'कस्तूरी कुंडल बसै' श्री शान्तिलाल जैन ने पूज्यवर के करकमलों में समर्पित की। आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी नगीनाजी वर्षों पूर्व साध्वी भत्तूजी के साथ रहा करती थीं। साध्वी भत्तूजी बहुत अच्छी साध्वी थीं। उस समय उनके साथ साध्वी नगीनाजी एक अच्छी कार्यकर्त्री साध्वी के रूप में रहती थीं। मैंने देखा कि उस समय साध्वी नगीनाजी अच्छा वक्तव्य दिया करती थीं। अभी वे मेवाड़ में हैं। उनकी पुस्तक 'कस्तूरी कुंडल बसै' से पाठकों को अच्छी प्रेरणा प्राप्त हो, शुभाशंसा।'

वह है दुनिया का विशिष्ट पुरुष

५ अप्रेल। भुज प्रवास का तीसरा दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में मंजिल का महत्त्व है तो मंजिल की ओर ले जाने वाले मार्ग का भी बहुत महत्त्व है। मंजिल कितनी भी अच्छी हो, यदि उसका मार्ग ज्ञात न हो तो मंजिल कैसे मिलेगी? अध्यात्म साधना के क्षेत्र में मोक्ष मंजिल है तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप उसका मार्ग है। इन चारों का योग होता है तो मोक्ष का मार्ग बन सकता है। तत्त्वार्थसूत्र में तप को अलग से विवक्षित नहीं किया गया है। सम्यक्दर्शन अर्थात श्रद्धा का महत्त्व है, किन्तु सम्यक् ज्ञान के अभाव में वह भटक भी सकती है। जैसे खूंटे से बंधी हुई गाय व्यवस्थित होती है, वैसे ही सम्यक् ज्ञान से युक्त श्रद्धा समीचीन रूप धारण करती है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'हमें यथार्थ का बोध होना चाहिए। सम्प्रदाय विशेष में रहते हुए भी सत्यान्वेषण करते रहना चाहिए। मेरा विश्वास है कि सम्प्रदाय का महत्त्व है, किन्तु मेरा यह भी विश्वास है कि सम्प्रदाय के ऊपर सत्य है। सम्प्रदाय तो एक व्यवस्था है। उसके लिए सत्य के साथ समझौता नहीं होना चाहिए। ऐसा सम्प्रदाय अनुमोदनीय नहीं, जो सत्य पर आवरण डाल दे। मस्तिष्क इतना खुला रहना चाहिए कि सम्प्रदाय की मान्यता से भी आगे सत्य को खोजने का प्रयास किया जा सके। जो ऐसा प्रयत्न करता है, वह दुनिया का विशिष्ट पुरुष है। जिस व्यक्ति के मन में सत्य के प्रति गहरी आस्था है, वह चाहे किसी देश, किसी वेश या परिवेश में हो, मेरी उसके प्रति सद्भावना है। निश्चय में जो केवली भगवान ने कहा, जाना वह सत्य है। व्यवहार जगत में हमें अपनी तटस्थ भावना से विश्लेषणात्मक यथार्थ खोजने का प्रयास करना चाहिए।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में निर्धारित विषय 'कच्छ में तेरापंथ' पर उद्गार व्यक्त करते हुए सप्तमाचार्य डालगणी की मुनि अवस्था में की गई प्रभावक कच्छ यात्रा और प्रवास का वर्णन किया। कच्छीपूज के रूप में प्रसिद्ध डालमुनि (आचार्य डालगणी) तथा स्थानकवासी नानीपक्ष के मुनि बींजपालजी

की चर्चा के उपरान्त स्थानकवासी समाज के प्रतिष्ठित श्रावक श्री वीरचन्दभाई द्वारा तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार करने के प्रसंग का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने सप्तमाचार्य परमपूज्य डालगणी के प्रति सादर श्रद्धा, मुनि बींजपालजी के प्रति सद्भावना व श्रावक वीरचन्दभाई के प्रति आध्यात्मिक वात्सल्यभाव व्यक्त किया।

कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी ने कच्छ और तेरापंथ से जुड़े तथ्यों, घटनाओं आदि का विशद विवेचन किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। समणी रुचिप्रज्ञाजी ने अपनी संसारपक्षीया भगिनी साध्वी मुक्तियशाजी तथा समणी करुणाप्रज्ञाजी ने साध्वी मलययशाजी द्वारा प्रेषित भावनाओं का वाचन किया। भुज की विधायक श्रीमती नीमाबेन आचार्य ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

आज मध्याह्न में कच्छ के तीसरे महाराव (राजा) श्री प्रागमलजी 'हाइनेस ऑफ कच्छ' ने आचार्यवर के दर्शन किए और पावन पथदर्शन प्राप्त किया। कच्छ के कलक्टर श्री ए.जे.शाह, क्षत्रिय समाज के प्रमुख श्री जोरावरसिंहजी जाडेजा, बार एसोसियेशन के प्रमुख श्री अमीरअली लोढिया, नागर जाति के प्रमुख श्री दिवाकरभाई अंताणी, मानव ज्योत संस्थान के प्रमुख श्री प्रबोधभाई मुनवर आदि को भी आज आचार्यवर के दर्शन एवं संबोध प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

मध्याह्न में स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय की साध्वी पद्मिनीबाई आदि साध्वियां पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुईं। कुछ समय पश्चात अरुणाबाई आदि साध्वियां भी आचार्यवर के उपपात में उपस्थित हुईं। पूज्यवर ने दोनों साध्वी समूहों से विभिन्न विषयों पर पृथक-पृथक वार्तालाप किया। उनके निवेदन पर आचार्यवर ने उन्हें पावन शिक्षाएं भी प्रदान कीं।

महादेवभाई द्वारा अनशन का प्रत्याख्यान

६ अप्रेल। भुज प्रवास का चतुर्थ दिन। चरणस्पर्श के क्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज शहर में पधारे। वोकड़ाफड़िया नामक कालोनी में गत दस दिनों से तिविहार तपस्यारत (संलेखनारत) श्री महादेवभाई मगनलाल दोशी के आवास के निकट आचार्यवर के चरण रुक गए। पूज्यवर ने उस इमारत के नीचे विराजमान होकर चिंतन किया, तत्पश्चात महादेवभाई की आन्तरिक भावना का परीक्षण करने हेतु दो संतों को 'सेकेंड फ्लोर' पर स्थित उनके घर भेजा। मुनिद्वय के सामने उन्होंने क्षीण आवाज में अनशन ग्रहण करने की दृढ़ भावना व्यक्त की। तत्पश्चात आचार्यवर उनके घर पधारे और पुनः उनकी भावना का परीक्षण किया। उनकी दृढ़ भावना को देखकर पूज्यवर ने उनके परिजनों और भुज तेरापंथी सभा के अध्यक्ष आदि गणमान्य व्यक्तियों से परामर्श किया। सब की सहमति प्राप्त कर आचार्यवर ने मंगलपाठ सक्कथुई का विधिवत (नीचे विराजमान होकर) उच्चारण और भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु आदि तेरापंथ की पूर्ववर्ती आचार्य परंपरा का श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए लगभग ९ बजे महादेवभाई दोशी को तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया। आचार्यवर के इस अनुग्रह से महादेवभाई की आन्तरिक प्रसन्नता अनिर्वचनीय थी, साथ ही साथ परिजनों और भुज तेरापंथ समाज में भी आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण बना।

विकृति न आए संस्कृति में

आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रवचन का विषय था--सुरक्षा संस्कृति की। निर्धारित विषय पर आचार्यवर से पूर्व साध्वीप्रमुखाजी और मंत्री मुनिश्री के वक्तव्य हुए। काठमाण्डो-नेपाल से पैंतालीस व्यक्तियों का संघ आचार्यवर की उपासना में पहुंचा। कार्यक्रम में काठमाण्डोवासियों ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कीं। नेपाल के उपराष्ट्रपति श्री परमानंद झा द्वारा प्रेषित आमंत्रण पत्र आचार्यवर के करकमलों में समर्पित किया। श्री वाडीलाल मेहता ने महादेवभाई को अनशन का प्रत्याख्यान करवाने हेतु आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सांस्कृतिक मूल्य सब जगह एक समान हों, यह आवश्यक नहीं है। भिन्न-भिन्न परंपराओं में तथा भिन्न-भिन्न परिवेश में भिन्न-भिन्न व्यवस्था और संस्कृति हो सकती है। किन्तु कुछ सांस्कृतिक मूल्य मानों सबके लिए उपयोगी हैं। नैतिकता की संस्कृति सभी के लिए हितकर है। अपने-अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदारी रहनी चाहिए। किसका क्या कर्तव्य है, यह गौण बात है। जिसका जो कर्त्तव्य है उसके प्रति निष्ठा का भाव महत्त्वपूर्ण होता है। कर्त्तव्यनिष्ठा की संस्कृति रहती है तो दुनिया की व्यवस्था अच्छी चल सकती है। अभिभावक अपने बच्चों में किस संस्कृति के संस्कार भरते हैं, यह महत्त्वपूर्ण बात है। घर के माहौल में कैसी संस्कृति है, यह ध्यान देने की बात है। वहां केवल भौतिकता की ही संस्कृति है अथवा अध्यात्म की भी संस्कृति है? घर में भगवान महावीर, आचार्यों के चित्र अथवा नमस्कार महामंत्र अंकित हों तो उन्हें देखने से प्रेरणा मिल सकती है। नशे की संस्कृति न हो। खानपान की संस्कृति में विकृति नहीं आनी चाहिए। परिवार, समाज और राष्ट्र में सात्त्विक आनंदमय माहौल बना रहे, ऐसी संस्कृति की सुरक्षा का प्रयास करना चाहिए।'

आज रात्रि में काव्य सन्ध्या का समायोजन हुआ, जिसमें मुनि विजयकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, बालमुनि विवेककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी आदि ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का काव्यमय संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

प्रायश्चित्त या अनुग्रह?

इन दिनों आचार्यप्रवर की सन्निधि में होने वाली रात्रिकालीन अर्हत वंदना का समय ८.०८ बजे निर्धारित है। प्रायः निर्धारित समय पर मुनिवृन्द उपस्थित हो जाते हैं और आचार्यवर अर्हत वंदना प्रारंभ भी करवा देते हैं। आज भी समय पर अर्हत वंदना प्रारंभ हो गई, किन्तु कुछ संत विलंब से पहुंचे। इस पर आचार्यवर ने फरमाया--'आज जिन-जिन संतों ने विलंब किया है, वे कल एक बार हमारे यहां से पानी पीएं अथवा मुनि रजनीशकुमारजी हमारे यहां से पानी ले जाकर उन्हें एक-एक बार पिला दें। दूसरे दिन पूज्यप्रवर के इस मृदु निर्देश की अनुपालना की गई। मुनिवृन्द ने आचार्यवर के इस अनुग्रहपूर्ण प्रायश्चित्त को मानों अमृत के रूप में स्वीकार किया तथा भविष्य में समय पर उपस्थित रहने के संकल्प का भाव भी उनकी मुखाकृति पर दृष्टिगोचर हो रहा था। इस प्रकार पूज्यप्रवर का मृदुतापूर्ण अनुशासन शिष्यों के लिए अपेक्षानुसार प्रेरणा और प्रोत्साहन का कार्य करता है।

समयबद्ध, न्यायसंगत व तैयारीयुक्त हो व्याख्यान

७ अप्रेल। प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रवचन का विषय था--जिनवाणी : जनकल्याणी। विषय पर बोलते हुए मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'भारतीय परंपरा अध्यात्मप्रधान रही है। इसमें ऋषि-मुनियों को बहुमान दिया जाता रहा है। परंपरा ब्राह्मण व श्रमण के रूप में दो भागों में विभक्त है। हम श्रमण परंपरा में जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिनवाणी अर्हतों की वाणी है। इस वाणी को जीवन में उतारने से यह जनकल्याणी बन सकती है। महावीर की वाणी में शान्ति के बीज व समाधान के सूत्र निहित हैं।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'तीर्थंकर सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त होकर प्रवचन करते हैं। आचार्यवर कई बार फरमाते हैं कि हम जैन शासन की जहाज में बैठे हैं। इस जहाज के केवट आचार्य हैं और इसकी पतवार जिनवाणी है। जनकल्याण हेतु भगवान प्रवचन करते हैं। जो सम्यक् जीवन जीना चाहते हैं, उसके लिए जिनवाणी आधार है। हर धार्मिक को जिनवाणी का अनुसरण करना चाहिए। साध्वीप्रमुखाजी ने आगे कहा--'भगवान महावीर ने पराक्रम की बात कही।

आज की युवापीढ़ी शार्टकट पथ से सफल होना चाहती है। थोड़े में अधिक लाभ प्राप्त करना चाहती है। उसमें सुविधावादी मनोवृत्ति पनप रही है। जीवन की दिशा को प्रारंभ से ही व्यवस्थित रखें। हमें जो विरासत में प्राप्त है, उसे न केवल संरक्षित रखना है, अपितु उसका उपयोग भी करना है। शान्ति व आनंदरूप आन्तरिक विकास करें व उसकी अनुभूति भी करें। इसके लिए जिनवाणी आधार है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जिन-वीतराग प्रभु की वाणी सत्य होती है। वह सत्य और निःशंक तत्त्व है, जो वीतराग द्वारा निरूपित हो। वीतराग कोई भी हो सकता है। इसका किसी देश व वेश से संबंध नहीं है। शर्त यही है कि वह राग-द्वेष मुक्त हो। वीतराग कभी असत्य नहीं बोलते। असत्य संभाषण में राग-द्वेष कारण होते हैं। साधु-साध्वियों को विशेष रूप से जिनवाणी (आगम) का अध्ययन करना चाहिए। जिनवाणी का स्वाध्याय साधु के लिए आहार है। यह साधना की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण खुराक है। आज आगम सुलभ हैं। आचार्य तुलसी के समय वि.सं. २०१२ में आगम संपादन शुरू हुआ, जो अभी तक चल रहा है। इस आगम संपादन कार्य के वाचनाप्रमुख आचार्य तुलसी थे और आचार्य महाप्रज्ञ प्रधान संपादक थे। उन्होंने इसमें अपनी प्रज्ञा, प्रतिभा व मेधा का प्रयोग किया। आज तो कई आगम प्रकाशित हैं। गुजराती व अंग्रेजी भाषा में भी आगम प्रकाशन हुआ है।'

व्याख्यान को महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'व्याख्यान देना महत्त्वपूर्ण है। इसमें 'रांत' न निकालें। इसको ऐसा-वैसा न समझा जाए। व्याख्यान भी ऐसा देना चाहिए, जिसमें श्रोता के साथ न्याय हो। सम्यक्तया तन्मय होकर प्रवचन करना श्रेयस्कर है। तत्वार्थाधिगम में यह वर्णन उपलब्ध होता है कि उपदेश देने में श्रम की परवाह नहीं करनी चाहिए। प्रवचन भी समयबद्ध होना चाहिए। निर्णीत समय पर उपस्थित चन्द लोगों को देखकर विलंब करना समीचीन नहीं है। समय पर समागत लोगों को लेट करना न्यायसंगत नहीं है। यदि निश्चित समय पर कोई नहीं आ पाया तो भी गीत व आगमवाणी प्रारंभ कर देना चाहिए, अपनी दुकान समय पर खोल देनी चाहिए। ग्राहक कभी भी आ सकता है। व्याख्यान देना भी दुकान की तरह है। इस दुकान को ठीक समय पर खोल लें। यह कभी अपेक्षावश विलंब से मंगल हो सकती है। व्याख्यान समापन में भी कभी विलंब हो सकता है। व्याख्यान प्रारंभ करने से पहले उसकी थोड़ी तैयारी करनी चाहिए। कहा गया है कि पन्ना आदि देखकर प्रवचन देने जाएं। ऐसा होने से व्याख्यान प्रभावी व अच्छा हो सकेगा। श्रोता को लाभ कम-अधिक भी मिल सकता है, पर प्रवचनकार अनुग्रह करके निर्जरा भाव से प्रवचन करता है तो वह धर्म का सौदा है। प्रवचन देना व सुनना दोनों लाभप्रद हैं। श्रावक को यथासंभव प्रातः व्याख्यान श्रवण करना चाहिए। व्याख्यान संस्कार प्रदायक होता है। आजकल तो लोग टीवी के माध्यम से घर बैठे प्रवचन सुन लेते हैं।' आचार्यवर ने कई आगमों के प्रतिपाद्य की विवेचना करते हुए यथोचित स्वाध्याय की साधु-साध्वियों को प्रेरणा प्रदान की, इसके साथ गृहस्थों को भी आगम अनुवाद पढ़ने के लिए उत्प्रेरित किया।

मेवाड़ में प्रवासित भुज के मुनि सिद्धार्थकुमारजी के भावपूर्ण पत्र को उनके संसारपक्षीय अग्रज श्री विनोद दोशी ने पढ़ा व अग्रज उपासक श्री अरविन्द दोशी ने पूज्यवर को भेंट किया। मुनि अनंतकुमारजी का भी वक्तव्य हुआ। स्थानीय कन्यामंडल ने होली से होली के मध्य वर्ष भर में तिरानबे हजार नौ सौ एक सामायिक की। इसे प्रस्तुति देते हुए कन्याओं ने एक भव्य चित्र भेंट किया। डा.सूर्यकान्त तिलक ने अपनी पुस्तक 'स्वास्थ्य-दर्शन' पूज्यवर को उपहृत की।

आचार्यवर ने कहा--'मुनि सिद्धार्थकुमारजी मेवाड़ में रह गए। वे अपनी अच्छी साधना करते रहें। मुनि अनंतकुमारजी मंत्री मुनिश्री के सान्निध्य में हैं। ये अच्छे संत हैं, अच्छा काम व विकास करें। कन्यामंडल ने जो भेंट किया है, वह तो अच्छा है, कन्याएं यह सोचें कि वे कितनी इधर साध्वियों की ओर आ सकती हैं? अब तो जीवन भर की सामायिक के बारे में सोचो। 'स्वास्थ्य-दर्शन' पुस्तक से अच्छी जानकारी मिल सकेगी, यह मंगलकामना है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जैन युवा सम्मेलन

मध्याह्न में स्थानीय तेयुप द्वारा कच्छस्तरीय जैन युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में 'जवानो जागो' थीम पर निर्धारित विषयों पर मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी के वक्तव्य हुए। स्वागत भाषण श्री सुरेश जैन, आभारज्ञापन श्री आशीष बावरिया तथा संचालन श्री नरेन्द्र मेहता ने किया।

युवाओं को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'जीवन में जागना व सोना दोनों चलते हैं। शरीर से सोना अलग है तो अज्ञान व मूर्च्छा में सोना अलग है। अज्ञान से ज्ञान, मूर्च्छा से अमूर्च्छा की ओर प्रस्थान करने का यथोचित प्रयास करें। जवान जागे, पर किस तरह जागे? युवक अपनी पवित्र शक्ति को पहचानें। अपनी शक्ति का विकास करें व उसका सदुपयोग करें। शक्तिशाली की पूछ होती है, कायर की नहीं। शक्ति का दुरुपयोग न करें। किसी को दुःख न दें, बेईमानी से बचें, ईमानदारी के मार्ग पर चलें तथा नशे की गिरफ्त में न जाएं।'

आचार्यवर की प्रेरणा से काफी युवकों ने नवकार मंत्र की माला का जप, नशामुक्ति, निर्धारित समय व सीमा में सामायिक आदि का संकल्प करवाया। उल्लेखनीय है--इस सम्मेलन में पांच सौ पचीस युवाओं ने भाग लिया, जिनमें लगभग चार सौ युवा इतर तेरापंथी थे। सम्मेलन प्रभावी रहा।

प्रवास पांच दिवस नो : प्रसाद पंचामृत नो

कच्छ मित्र प्रेस के साथ इन्द्रा पार्क स्थित वीतराग समवसरण में बैक ड्राप पर लगा उपरोक्त वाक्य 'प्रवास पांच दिवस नो : प्रसाद पंचामृत नो' चरितार्थ हो रहा था। आचार्यवर का पावन प्रवेश बहुत ही प्रभावक था। प्रवेश के साथ पंचदिवसीय कार्यक्रम में हजार से चार हजार की उपस्थिति थी। मात्र एक सौ चालीस तेरापंथी परिवारों से तो ऐसा बिल्कुल संभव नहीं था। जैन समाज के साथ जैनेतर लोगों ने पूज्यप्रवर के प्रवचन-पीयूष का पूरा रसास्वादन किया। स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी छहकोटि संप्रदाय की साध्वी पीयूषाबाई स्वामी, पद्मिनीबाई स्वामी आदि अनेक साध्वियां प्रायः प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करतीं। आचार्यवर के प्रवचन के दौरान समवसरण में पिनड्राप साइलेंट की स्थिति बन जाती। प्रातःकालीन प्रवचन पूर्वनिर्धारित विषय पर हुए। साध्वीप्रमुखाजी के भी विषयबद्ध अभिभाषण हुए। आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व मंत्री मुनिश्री के प्रेरक वक्तव्य हुए। रात्रि में भी निर्धारित विषयों पर कार्यक्रम चले। ३ अप्रेल को 'सफल बनावीए मनुष्यभव ने', ४ अप्रेल को 'जाणो महत्त्व समय नुं,' ५ अप्रेल को 'सिद्धि नुं सोपान सरलता' विषय पर आचार्यवर के प्रेरक उद्बोधन हुए। ४ अप्रेल को मुनि अनंतकुमारजी का प्राक् वक्तव्य हुआ। ५ अप्रेल को ज्ञानशाला भुज ने गीत व परिसंवाद के रूप में शानदार प्रस्तुति दी। ६ अप्रेल को विविध भारती के रूप में काव्य सन्ध्या का आयोजन हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रमों का संचालन मुनि पुलकितकुमारजी ने किया।

इस प्रवास में एक महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ कि पूज्य आचार्यवर ने श्री महादेवभाई मगनलाल दोशी को दस की तपस्या में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया।

भुज श्वेताम्बर जैन समाज के सात संघ हैं। मूर्तिपूजक तपागच्छ के पांच सौ, अचलगच्छ के ढाई सौ, खरतरगच्छ के नब्बे घर हैं, स्थानकवासी आठकोटि मोटी पक्ष के तीन सौ पचास, आठकोटि नानी पक्ष के दो सौ पचहत्तर, छहकोटि लीमड़ी अजरामर के तीन सौ पचास घर व तेरापंथ के एक सौ चालीस घरों सहित कुल एक हजार आठ सौ जैन परिवार हैं। विभिन्न संघों के अपने उपासना व सामाजिक स्थल हैं। शहर में जैन समाज का व्यापार व सामाजिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से अच्छा प्रभाव देखा गया। जैन समाज के सातों संघों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की एक संगोष्ठी ७ अप्रेल को आयोजित हुई।

प्रारंभ में मंत्री मुनिश्री का वक्तव्य हुआ, तत्पश्चात् आचार्यवर का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

पूज्य आचार्यवर ने भुज के सभी १४० परिवारों के मकानों व अपार्टमेंट का स्पर्श किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार चार दिनों के भ्रमण के दौरान लगभग दो सौ पचास बंगलों व अपार्टमेंट में पूज्यवर का चरणस्पर्श हुआ। पूज्यवर तेरापंथ समाज के १४० परिवारों के लगभग अस्सी बंगलों आदि में पधारे। एक-दो व उससे अधिक तेरापंथी परिवारों वाले किसी अपार्टमेंट में नीचे पूज्यवर पधारते तब उसमें रहने वाले तेरापंथी व इतर तेरापंथी नीचे आकर दर्शन करते, प्रेरणा प्राप्त करते और मंगलपाठ श्रवण करते। बंगलों व अपार्टमेंट में रहने वाले सभी जैन परिवारों का आकलन करें तो तेरापंथ के अलावा लगभग आठ सौ परिवार निकट संपर्क में आए। आचार्यवर की सहजता, सरलता एवं करुणा भरी मुस्कान ने सबको अभिभूत कर दिया। भ्रमण के दौरान सन् २००१ में आए विनाशकारी भूकंप से बनी स्थिति की भी लोग अवगति देते रहे।

भुज में आचार्यवर का प्रवास शहर के मध्य इन्दिरा पार्क के सामने स्थित डोशाभाई लालचन्द जैन धर्मशाला में हुआ। साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास रणछोड़राय सत्संग मंडल हॉल लालटेकरी में हुआ। भुज की समग्र व्यवस्था आचार्य महाश्रमण कच्छ प्रवास व्यवस्था समिति के अंतर्गत रही। इसके सहसंयोजक श्री कीर्तिभाई केशवलाल संघवी के नेतृत्व में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथी महिला मंडल के टीमवर्क ने प्रवास को सफल एवं अविस्मरणीय बनाया। कार्यकर्ताओं ने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी, ऐसा प्रतीत हुआ। प्रवास के दौरान तेरापंथी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समारोह की कार्यसमिति की मीटिंगें हुई। इस कारण भुज में बाहर के कार्यकर्ताओं का बड़ी संख्या में आगमन हुआ। भुज के सभी तेरापंथी परिवारों की पारिवारिक सेवा हुई। आचार्यवर का प्रेरक पाथेय प्राप्त हुआ। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने प्रारंभ में परिवारों की सार-संभाल की।

७ अप्रेल को रात्रि में आयोजित मंगलभावना समारोह में अनेक भाई-बहनों ने अपने मंगलभाव व्यक्त किए। आचार्यवर ने कहा--'मैंने पहली बार भुज को देखा है। भुज काफी बड़ा शहर है। यह जयपुर-उदयपुर से मिलता-जुलता लगा। पहले यह कल्पना नहीं थी कि इतना बड़ा होगा, यहां आने के बाद इसे देखा कि यहां भी बड़ी बिल्डिंगें हैं। यहां के लोगों की धार्मिक भावना देखी, जैनों का अच्छा प्रभाव भी देखा। यहां के जैन समाज की एकता अच्छी लगी। सभी में धार्मिक भावना बनी रहे। बच्चों की ज्ञानशाला चलती रहे।'

प्रवास के दौरान राजनीति, पत्रकारिता, साहित्य, प्रशासन आदि क्षेत्रों से जुड़े विशिष्ट लोग प्रवचन के समय व अन्य समय में आचार्यवर के दर्शन किए, वार्तालाप किया व मार्गदर्शन प्राप्त किया। इनमें प्रमुख थे विधायक श्रीमती नीमाबेन आचार्य, स्वामीनारायण मंदिर के सुप्रसिद्ध शिल्पकार श्री नरेश सोनी, आकाशवाणी के डायरेक्टर श्री मनोज सोनी, डा.निपुण बुच, डा.हेमेन शाह, कच्छी बीसा ओसवाल समाज के प्रमुख श्री ताराचन्दभाई छेड़ा, बागड़ बे चौबीसी प्रमुख श्री बसंतभाई खंडोल, अ.भा.नागपट समाज के अध्यक्ष श्री कमलेशभाई संघवी, अचलगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री महेन्द्रभाई शाह, तपागच्छ के अध्यक्ष श्री शांतिभाई जवेरी, खरतरगच्छ के अध्यक्ष श्री रजनीभाई पटवा, छहकोटि के अध्यक्ष श्री नानालाल डोसी, आठकोटि मोटीपक्ष के अध्यक्ष श्री विनोदभाई मेहता, आठकोटि नानीपक्ष के अध्यक्ष श्री मितुलभाई शाह, सुपार्श्व जैन सेवा मंडल के श्री कौशलभाई शाह, कच्छी दसा ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री प्रबोधभाई मुनवर, जैन जागृति सेंटर के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रभाई शाह, जैन सोशियल ग्रुप के श्री राजेश शाह, श्री जयेश शाह, पूर्व विधायक श्री मोहनभाई शाह, श्री मुकेशभाई जवेरी, उपाध्यक्ष नगरपालिका भुज श्रीमती मंजुलाबेन वोरा, नेत्र चिकित्सक डा. रूपेश मेहता, डा.अभिषेक मेहता, डा.कपिल संघवी, आर्थोपेडिक डा. रश्मि शाह, नेचुरोपैथी चिकित्सक डा.अतुल दवे, फिजियोथेरेपिस्ट डा.मोहित शाह, क्षत्रिय समाज के अध्यक्ष नारणजी कलुभा जाडेजा, दैनिक कच्छमित्र के संपादक श्री दीपकभाई मांकड, प्रबंधक शैलेशभाई कंसारा, एडीटर

बोर्ड के सदस्य नवीनभाई जोशी एवं निखिल पंड्या, भुज के नगर पार्षद श्री देवराजभाई गढ़वी, श्री दिलीपभाई पूनमचन्द शाह, अली अहमद एवं श्री घनश्यामभाई ठक्कर, बी.सी.सी.बी. बैंक के चेयरमैन श्री जयेश भाई सचदेव, डायरेक्टर श्री मधुकर ठक्कर, लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री जगदीशभाई सोनी, जैन समाज के वरिष्ठ श्रावक जीतूभाई काकरेचा, श्री महेशभाई गठेचा, श्री भद्रेशभाई दोशी।

माधापर में आचार्यवर का पदार्पण

८ अप्रेल। आज प्रातः आचार्यवर ने भुज शहर से माधापर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में आचार्यप्रवर भूकंप के बाद तेरापंथ समाज के लोगों को मिले भूखंड पर निर्मीयमाण महाप्रज्ञ नगर पधारे। अभी तक वहां कोई मकान निर्मित नहीं हुआ है। तेरापंथ भवन हेतु भी भूमि यहां आबंटित है। एक भव्य जुलूस के साथ आचार्यवर पंचायत प्राथमिक कन्याशाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रवेश से पूर्व माधापर मेन रोड पर 'आचार्य तुलसी मार्ग' का उद्घाटन स्थानीय विधायक श्रीमती नीमाबेन आचार्य ने किया। श्रीमती मोंघीबेन मणिलाल पीताम्बर भाभेरा परिवार द्वारा निर्मित 'आचार्य तुलसी द्वार' का उद्घाटन परिवार के सदस्यों ने आचार्यवर का मंगलपाठ सुन कर किया।

अस्पताल परिसर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल व महिला मंडल ने संयुक्त स्वागत गीत प्रस्तुत किया। दीक्षार्थिनी मुमुक्षु नीता, स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुरेश मेहता ने अपने विचार रखे। महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, महासभा के गुजरात राज्य प्रभारी श्री विनोद बांठिया, मुम्बई सभा के मंत्री श्री दिनेश सुतरिया, स्थानीय मूर्तिपूजक समाज के श्री शशिकान्त शाह, तालुका पंचायत सदस्य श्री हितेश खंडोल, बागड़ बे चौबीसी के अध्यक्ष श्री शशिकान्त भाभेरा, स्थानीय निवासी मुम्बई प्रवासी श्री जीतूभाई भाभेरा के वक्तव्य हुए। विधायक श्रीमती नीमाबेन आचार्य ने कहा--'आचार्यजी ने जनहित में अहिंसा के संदर्भ में जो सपने देखे हैं, वे पूरे हों, यह हार्दिक अभिलाषा है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया ऐसी है, जिसमें ठगविद्या, छलना व प्रवंचना भी चलती है। व्यक्ति थोड़े से लाभ के लिए दूसरों को धोखा देने का प्रयास करता है। लोभ के वशीभूत होकर स्वयं को सुविधापूर्ण बनाने हेतु, कषायोदय व कुटिल मनोवृत्ति के कारण व्यक्ति दूसरों को धोखा देता है। वह कुटिलता से दूर तभी हो सकता है, जब उसकी चेतना सरल व उदात्त बने। जो ऋजुभूत होता है, शोधि उसकी होती है। सरलता के बिना सचाई की साधना संभव नहीं। इस साधना का पहला सूत्र है--अल्पभाषिता। बहुभाषी के असत्य संभाषण की संभावना रह सकती है। सुनो ज्यादा, बोलो कम। परिमितभाषी के लिए सचाई की साधना में अनुकूलता रह सकती है। सचाई की साधना का दूसरा सूत्र है--छलना से बचना। इससे सत्याराधन सुगम व सम्यक् हो सकता है।'

भारत को आध्यात्मिक भूमि बताते हुए आचार्यवर ने कहा--'भारत ऋषियों-महर्षियों और संतों की भूमि है। यह इस देश का उजला पक्ष है। नैतिक आचरण की अल्पता इसके गौरव में न्यूनता लाती है। सचाई का मार्ग राजपथ जैसा है। यह मार्ग कंटकाकीर्ण, पथरीला व कष्टपूर्ण हो सकता है। हम सदैव मंजिल को देखें। अणुव्रत का संदेश है कि जीवन में प्रामाणिकता रहे। ईमानदारी के मार्ग पर चलने से आत्मा कर्मबंधन से बच जाती है और सांसारिक लाभ यह मिल सकता है कि ईमानदार के पास ग्राहक बढ़ते हैं, उसका विश्वास जमता है। सरल व्यक्ति अपने पुण्य की सुरक्षा कर लेता है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर आर्जव का भाव पुष्ट रहे, यह अपेक्षित है।'

आचार्यवर ने प्रसंगवश कहा--'महासभा के अध्यक्ष हीरालालजी मालू आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में मनोयोग से लगे हुए हैं। इसके लिए इन्होंने संभवतः अपने व्यापार आदि को भी गौण कर दिया है, ऐसा लगता है। ये समाज के लिए अपने श्रम एवं समय का नियोजन कर रहे हैं।'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 13-04-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

माधापर आगमन के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'माधापर भुज का निकटवर्ती क्षेत्र है। आज माधापर के अपने श्रावकों के बीच पहली बार आया हूं। यहां के लोगों में शुद्धि बनी रहे, यह अपेक्षित है।'

कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। जिला परिषद सदस्य श्री जयंतभाई माधापरिया, नवावास-माधापर के सरपंच श्री अरजनभाई बुड़िया, जूनावास-माधापर की सरपंच श्रीमती हंसाबेन सोलंकी ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया।

माधापर प्रवेश के बाद व कार्यक्रम से पूर्व आचार्यवर ने जूनावास के श्रद्धालु घरों का स्पर्श किया। पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन में भी पधारे, जहां साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास था। वहां आचार्यवर ने विराजमान होकर 'हमारे भाग्य बड़े बलवान' गीत का संगान किया। माधापर में तेरापंथ के तेरह व अन्य जैन समाज के पैंसठ घर खुले बताए गए। स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय के श्री सौम्यमुनि व चैत्यमुनि पूज्य आचार्यवर से मिले और संक्षिप्त वार्तालाप किया। रात्रि में भी आचार्यवर का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। माधापर का एकदिवसीय प्रवास प्रभावी और उत्प्रेरक रहा।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री भेरूंलालजी बोहरा (सुपुत्र-स्व.रंगलालजी-समाधिनिष्ठ श्राविका स्व.श्रीमती मोहनबाई बोहरा, केलवा) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती फूलीदेवी, सुपुत्र तनसुख, नरेन्द्र बोहरा, द्वारा-वेलकम मार्मो प्रा.लि. केलवा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. सोहनलालजी बोहरा (केलवा) की ७वीं पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र रमेश, जुगराज, सुपौत्र राहुल, सुपौत्री तमन्ना, तिहाना बोहरा, द्वारा-मंगलमणि ज्वेलर्स प्रा.लि.मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.बागमलजी नाथाजी जैन (पेटलावद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र जयंतीलाल, सुपौत्र रमणलाल, कमलकुमार, प्रपौत्र पीयूष, विनय जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती रेशमीदेवी संचेती (मोमासर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती रतनीदेवी संचेती द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री मदनराजजी गादिया एवं श्रीमती पदमादेवी गादिया (रामसिंहकागुड़ा-शिमोगा) द्वारा साध्वी कुंथुश्रीजी के सान्निध्य में शीलव्रत स्वीकार करने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू ललितकुमार-सीमा, एवं महेन्द्र-किरण, कुशल-कविता, किशोर-ममता, अजय-कुसुम द्वारा प्रदत्त।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का गांधीधाम से वाव एवं वाव से जोधपुर और उससे भी आगे लाडनूं तक का यात्रा पथ पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित हो चुका है। दर्शन-सेवा हेतु आने वाले भाई-बहिन उसी के अनुसार अपना कार्यक्रम सुनिश्चित करें। आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय अहमर्निश पूज्यप्रवर की सेवा में हैं। किन्तु पत्र व्यवहार की दृष्टि से अब हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,
तेरापंथ भवन, पो. वाव-३८५ ५७५, जि. बनासकांठा (गुजरात)
मोबाइल नं. ०७६६८६५०४१० (गुजरात प्रवास में), ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**